फेम जिला इकाई के साथ जुड़े नये सदस्यों के साथ जेण्डर मुद्दो पर
एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण माड्यूल

मॉडयूल के उपयोगकर्ता –

फेम द्वारा राष्ट्रीय व राज्य के स्तर पर टी0ओ0टी0 के माध्यम से एक संदर्भ समूह तैयार किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित टी0ओ0टी0 में फेम–झारखण्ड व पश्चिमी बंगाल से दो–दो सदस्यों ने भाग लिया ताकि राज्य स्तर पर हर संस्था से एक सदस्य को जोड़कर राज्य स्तरीय प्रशिक्षको का समूह तैयार किया जा सके। इसी क्रम में फेम से जुड़ी सदस्य संस्थाओं के स्टाफ के साथ दोनो राज्यों में 'जेण्डर व मर्दानगी' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। राज्य स्तरीय प्रशिक्षण का फैसलिटेशन राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित टी0ओ0टी0 में भाग लेने वाले राज्य स्तरीय प्रतिनिधियों ने किया। राज्य स्तरीय इस प्रशिक्षण में शामिल प्रतिभागियों के द्वारा अपने–अपने जिलों के स्तर पर जिला फोरम के साथ जुड़े नये सदस्यों के साथ एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन करने हेतु इस माड्यूल का निर्माण किया गया।

मॉडयूल का उपयोग –

उपयोगकर्ता को समूह संचालन कौशल व प्रस्तुतीकरण कौशल का होना जरूरी है तथा विभिन्न सामाजिक मुद्दों व जेंडर, महिलाओं पर हिंसा व मर्दानगी आदि विषयों की जानकारी व समझ हो और अधिकार आधारित प्रक्रिया की समझ रखते हों। उपयोगकर्ता स्थानीय स्तर पर निकलने वाले मुद्दों की पहचान व उनकी विश्लेषणात्मक समझ, बदलाव के व्यवहारिक पहलुओं, अनुभवों तथा आने वाली संभावित चुनौतियों आदि को दूसरों के साथ सहज तरीके से रख सकने में सक्षम हो। उपयोगकर्ता के लिए यह भी जरूरी है कि वह दूसरों के अनुभवों को सम्मानजनक तरीके से स्वीकारने व इस पर काम करने की रूचि रखता हो। इस प्रकार ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता जो युवाओं व पुरूषों के साथ काम करते हैं, वे इस मैनुअल का प्रयोग कर सकते हैं।

मॉड्यूल का उद्देश्य –

- फेम जिला फोरम के साथ जुड़े नये सदस्यों की जेण्डर व जेण्डर समानता पर जानकारी व समझ बढ़ाना।
- फेम सदस्यों की जेण्डर आधारित भेदभाव व महिलाओं पर उसके प्रभावों पर समझ बनाना।
- जेण्डर समानता के लिए प्रतिभागियों के स्वं बदलाव हेतु नियोजन तैयार करने में मदद करना।

सत्र 01: रजिस्ट्रेशन, स्वागत एंव परिचय उद्देश्य

पद्वति : व्यक्तिगत चर्चा
समय : 60 मिनट
सामग्री : आवश्यकता नहीं
उददे्श्य :

- प्रतिभागी एक दूसरे के बारे में जान पायेगें।

गतिविधियां :

1. सभी प्रतिभागियों का रजिस्ट्रेशन अवश्य करवा लें।
2. सहजर्कता सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों का स्वागत करें।
3. इसके बाद सहजकर्ता प्रतिभागियों को स्पश्ट करें कि हम लोग आपस में एक दूसरे का परिचय करेगें। जिसमें सभी प्रतिभागियों से कहें कि, आप अपना परिचय देंगे।
4. जिसमें प्रतिभागी को अपना नाम, गॉव का नाम और यदि किसी समूह से जुड़े हैं तो बताने के लिए कहे। सर्वप्रथम सहजर्कता अपना परिचय प्रतिभागियों को बताये।

अंत में पुरूषों के साथ काम करने की जरूरत तथा एक दिवसीय प्रशिक्षण के उद्देश्यों के बारे में प्रतिभागियों को स्पष्ट करें।

सत्र 02 – समता और समानता

पद्धति : सारस लोमड़ी की कहानी, खुली चर्चा
समय : 60 मिनट
सामग्री : सारस लोमड़ी के चित्र, बोर्ड मारकर

उददे्श्य :

- प्रतिभागियों में समता–समानता के अन्तर पर जानकारी व समझ बढ़ाना।
- समता के महत्व पर दृष्टकोण निर्माण करना।

गतिविधियां :1

1. सहजर्कता, प्रतिभागियों से कहे कि समानता से आप क्या समझते हैं सहजकर्ता समानता शब्द को बोर्ड पर लिख दे प्रतिभागी जो–जो बताएं उन्हें बोर्ड पर लिखते जाय –
   जैसे – बराबरी, समान, आधा आधा, दो हिस्से बराबर
2. तत्पश्चात् सहजकर्ता प्रतिभागियों को उदाहरणों से समझाये कि दो व्यक्ति हैं जिनमें एक के पास 20 रू है व दूसरे के पास 10रू है यदि मेरे पास 100रू है। तो समानता के आधार पर बंटवारा करना है। मैने 50–50 रू बांट दिये तो क्या सही बटवारा हो गया? लेकिन देखा कि इसमें एक के पास 70 रू हो गये व एक के पास 60 रू ये तो फिर भेदभाव हो गया?
3. सहजकर्ता, प्रतिभागियों से पूछे कि हमें समान बंटवारे में क्या करना चाहिए? समान बंटवारे का मतलब क्या है? इस पर ग्रुप के साथ अलग उदाहरणों से चर्चा करायें। जिससे कि प्रतिभागी यह समझ जायें

कि समानता के आधार पर बंटवारा करने से गैरबराबरी को और बढ़ावा मिल रहा है। प्रतिभागियों को सोचने के लिए छोड़ दें।

गतिविधियां :2

सहजकर्ता, बोर्ड पर सारस और लोमड़ी का चित्र बनाये और दोनों के सामने एक सूराही में बराबर खाना है और कहें कि दोनों को खाना है। उसमें देखने को यह मिलेगा कि लोमड़ी नहीं खा पाती है। फिर बर्तन बदल दिये गये छितरी प्लेट में खाना डाला गया जिसमें देखने को मिला कि सारस सिर्फ चोंच मारता रह गया।

फिर प्रतिभागियों से चर्चा करायें कि खाना बराबर था समान बर्तन थे फिर भी एक भूखा रह जा रहा था ऐसा क्यों? प्रतिभागी सोच कर बतायंगे कि –

- दोनों की आवश्यकताएं अलग अलग थी।
- दोनों की जरूरतों का ध्यान नहीं रखा गया।
- दोनों की पृष्ठभूमि अलग–अलग थी।
- समानता आधारित बंटवारा किया गया।

फिर प्रतिभागियों से निकलवायें कि इसका असर क्या हो रहा था। प्रतिभागी पुनः सोचने के लिए विवश हो जायंगे और बतायंगे कि –

- ये जरूरत मन्द के साथ भेदभाव है
- परिणामों में असमानता आ रही है।

सहजकर्ता कहें कि सही बंटवारा क्या है चर्चा करायें फिर बोर्ड पर समता शब्द लिख दें और कहें कि समता का मतलब क्या है? प्रतिभागी बता पायंगे कि–

- परिणामों में समानता लाने के लिए समता जरूरी है।
- जरूरतमन्द को लाभ मिलेगा इसलिए समता आधारित बंटवारा होना आवश्यक है।
- कुछ के साथ सकारात्मक भेदभाव करना जरूरी है ताकि हॉशियाबद्ध लोग भी समानता में आ सकें।

इसके बाद सहजकर्ता, प्रतिभागियों को विभिन्न स्थानीय उदाहरण रखने के लिए प्रोत्साहित करें यथा पंचायतों में महिलाओं व वंचित समुदाय को आरक्षण, गरीब परिवारों के बच्चों के लिए स्कालरशिप, नौकरी में आरक्षण, लड़कियों के लिए साईकिल का प्रावधान, राशन वितरण हेतु अलग–अलग कार्ड आदि।

गतिविधि उपरान्त प्रकाशित मुद्दे :

1. सत्र के बाद प्रतिभागियों में चिन्तन मनन होना शुरू हो जायेगा उन्हें समता व समानता के अन्तर पर स्पष्टता हो जायेगी। समता के बंटवारे को सही ठहराने पर एक साझा नजरिया बन गया होगा।
2. समानता से पहले से कमजोर परिस्थिति में रह रहे लोगों को नुकसान उठाना पड़ता है जबकि समता में अलग व्यवहार व विशेष मापदण्ड अपनाने की जरूरत होती है। समता का सम्बंध परिणामों में समानता से है और इसके लिए सकारात्मक भेदभाव अनिवार्य है।
3. सकारात्मक भेदभाव हेतु निम्न पहल जरूरी है –
    - वंचितों के लिए विशेष सुविधाओं का प्राविधान हों
    - जानकारी बढ़ाने के लिए विशेष मौके उपलब्ध हों
    - गल्तियां होने पर छूट हो, टीका टिप्पणी न हो

- जरूरत के आधार पर अतिरिक्त संसाधनों का प्राविधान
- निर्णय लेने की छूट

सत्र 03 – जेंडर एवं सेक्स

पद्वति :, ग्रुप चर्चा व प्रस्तुतीकरण
समय : 60 मिनट
सामग्री : मारकर, चार्ट
उददे्श्य :

- प्रतिभागियों में जेंडर व सेक्स के अन्तर पर स्पष्टता बढ़ाना।
- प्रतिभागियों की जेंडर की अवधारणा पर जानकारी व समझ बढ़ाना।

गतिविधियां :

1. प्रतिभागियों की संख्या के आधार पर दो या चार समूह बांट दें।
2. एक समूह को लड़का की पहचान तथा दूसरे समूह को लड़की की पहचान लिखने के लिए कहें।
3. इसके बाद दोनों समूहों को बारी बारी से प्रस्तुतीकरण करने के लिए कहें।
4. दोनों समूहों की प्रस्तुतीकरण के बाद निम्न आधार पर विश्लेषण करवाये –

लड़का		लड़की	
सामाजिक पहचान	**जैविक पहचान**	**जैविक पहचान**	**सामाजिक पहचान**
• पेंट पहने • शर्ट पहने • हट्टा कट्टा • छोटे बाल • बॉडी मसल्स • बेल्ट पहने • जीन्स पहने	▪ लिंग ▪ मूँछ ▪ अण्डकोष ▪ शुक्रांणु ▪ छोटे स्तन ▪ भारी आवाज	▪ योनि ▪ गर्भाशय ▪ माहवारी ▪ स्तनों में उभार ▪ अण्डांणु ▪ पतली आवाज	• लम्बे बाल • कान में बाली • पायल पहने • गले में माला • फ्रॉक पहने • चूड़ी पहने • होंठ में लिपिस्ट
जेंडर या सामाजिक लिंग	सेक्स/जैविकीय	सेक्स/जैविकीय	जेंडर या सामाजिक लिंग

गतिविधि उपरान्त प्रकाशित मुद्दे :

जेंडर – समाज द्वारा निर्मित है। यह देश, काल परिस्थति के अनुसार बदलता रहता है। यह अस्थाई है। इसको बदला जा सकता हैं यह महिला पुरूष भेदभाव बनाये रखता है जो कि इस प्रकार दिखाई देता है–

✓ महिला–पुरूष पहनावे में।
✓ महिला–पुरूष की काम की भूमिकाओं में।
✓ महिला–पुरूष के व्यवहारों में भेदभाव आदि।

सेक्स – यह जैवकीय है इसका स्वरूप दुनिया में एक जैसा है। यह स्थाई है। इसको बदला नहीं जा सकता। यह महिला–पुरूष में भेदभाव नहीं करता यह एक जैविक अन्तर है जो बताता है कि यह महिला का शरीर है यह पुरूष का शरीर है।

✓ यह मात्र शारीरिक अन्तर है।
✓ यह सिर्फ अन्तर है भेदभाव नहीं करता।

जेण्डर आधारित सोच के आधार पर ही अच्छे और बुरी महिला का नजरिया स्थापित किया जाता है। अगर कोई महिला जो पुरूशों की तरह गुण रखती है और व्यवहार करती है तो उसे अच्छी महिला नही माना जाता।

सत्र के अन्त में प्रतिभागियों में जेंडर व सेक्स को लेकर कितनी समझ बन पाई है इसका परीक्षण करें प्रतिभागियों से जेंडर सेक्स आधारित सवाल करें जैसे–

- महिलाएं कमजोर व पुरूष ताकतवार होते हैं– जेंडर है कि सेक्स?
- महिलाएं ही बच्चा पैदा कर सकती हैं– जेंडर है कि सेक्स?
- लड़के कठोर लड़कियां कोमल होती हैं– जेंडर है कि सेक्स?
- महिला ही बच्चे को दूध पिला सकती है– जेंडर है कि सेक्स?
- लड़कों को रोना नहीं चाहिए– जेंडर है कि सेक्स?
- महिलाओं को कम बोलना चाहिए– जेंडर है कि सेक्स?
- पुरूषों को घर के महिलाओं वाले काम नहीं करने चाहिए – जेंडर है कि सेक्स?

सत्र 4 : सुविधा एवं प्रतिबन्ध

पद्वति : छोटे समूह में चर्चा व प्रस्तुतीकरण
समय : 60 मिनट
सामग्री : मारकर, चार्ट पेपर

उददे्श्य :

- हमारे समाज ने महिलाओं को किस–किस तरह के प्रतिबंध लगाये हैं व किस तरह की सुविधाएं दी हैं, प्रतिभागियों की, सकारात्मक जानकारी बढ़ाना।
- महिलाओं पर प्रतिबन्ध से किस प्रकार से उनके अवसर छिन जाते हैं उनकी रचनात्मकता व मानवीय शक्ति कम हो जाती है, पर समझ बनाना।

गतिविधियां :

1. सहजर्कता प्रतिभागियों को चार ग्रुपों में विभाजित कर दे। ग्रुपों के नाम 1 से 4 तक की गिनती करा कराकर करा लें।
2. समूह विभाजन के बाद हर समूह को निम्न सवालों पर समूह चर्चा कर चार्ट तैयार करने हेतु कहें तथा इसके लिए 25 मिनट का समय निर्धारित कर दें।
   ग्रुप 1 – समाज ने महिलाओं को किस–किस तरह की सुविधाएं दी है?
   ग्रुप 2 – समाज ने महिलाओं पर किस–किस तरह के प्रतिबंध लगाये हैं?
   ग्रुप 3 – समाज ने पुरूषों को किस–किस तरह की सुविधाएं दी है?

ग्रुप 4 – समाज ने पुरूषों पर किस–किस तरह के प्रतिबंध लगाये हैं?

3. समूह कार्य के बाद सभी समूहों को बारी–बारी से प्रस्तुतीकरण करने के लिए बुलाएं तथा इसके लिए 5 मिनट का समय निर्धारित कर दें।
4. चारो समूहों की प्रस्तुतीकरण के बाद सहजकर्ता को चाहिये कि वह प्रतिभागियों से पूछे कि इन प्रस्तुतिकरणों से हमारी क्या समझ बन रही है?
5. अंत में सहजकर्ता को चाहिये कि वह महिलाओं पर प्रतिबन्ध का उनकी रचनात्मकता और मानव शक्ति पर किस तरह से असर पड़ता है, स्पष्ट करें।

गतिविधि उपरान्त प्रकाशित मुद्दे :

पुरूषों पर बहुत कम प्रतिबंध है व महिलाओं को कम सुविधाएं हैं जिसे कारण से यह एक जेंडर आधारित सोच है जो महिलाओं पर नियंत्रण बनाये रखने के लिए चलाई गई हैं जिसे बदलना जरूरी है। इस जेंण्डर आधारित सोच के कारण महिलाएं समाज में अपनी पहचान नही बना पाती, वह बाहर जाने व आत्मनिर्भर बनने के मौकों से वंचित हो जाती हैं जिससे काम करने की उनकी रचनात्मकता समाप्त हो जाती है। वह हमेशा अपने आप में आत्मग्लानि महसूस करने लगती हैं तथा धीरे–धीरे वें, पुरूषों पर आश्रित हो जाती हैं जिसका असर यह होता है कि पुरूष, महिलाओं पर अपने कायदे चलाते हैं तथा उन्हें नेतृत्वकारी भूमिका में नहीं आने देते हैं।

प्रतिबन्ध महिलाओं के साथ हो या पुरूशों के साथ, किसी के साथ भी ठीक नही है अतः न्यायपूर्ण व्यवस्था के लिए जरूरी है कि हम महिलाओं के साथ जुड़े प्रतिबन्धों को समाप्त करने के लिए पुरूश पहल करें।

सत्र 05 : जेंडर आधारित भेदभाव उससे जुडी मान्यताएं और उसका असर

पद्वति : छोटे ग्रुप में चर्चा/प्रस्तुतीकरण
समय : 90 मिनट
सामग्री : बोर्ड मारकर, चार्ट पेपर

उददेश्य :

- प्रतिभागियों की जेंडर आधारित भेदभाव पर सकारात्मक जानकारी व समझ बढ़ाना।
- प्रतिभागियों में यह समझ बढ़ाना कि जेंडर आधारित भेदभाव का असर महिलाओं व लड़कियों पर किस तरह पड़ता है।

गतिविधियां : 1 जेण्डर आधारित भेदभाव

1. सहजकर्ता प्रतिभागियों को जेंडर आधारित भेदभाव को निकलवाने के लिए प्रतिभागियों को चार छोटे ग्रुपों में बांट दें।
2. ग्रुप विभाजन के बाद प्रतिभागियों को समूह चर्चा के लिए 20 मिनट का निर्धारण करते हुए प्रस्तुतीकरण हेतु समूह लीडर तय करने हेतु कहें।
3. प्रतिभागियों को निम्न प्रकार से समूह चर्चा हेतु विशय दें –
   ग्रुप न. 1 किशोरियों के साथ घर के अन्दर कौन–कौन से भेदभाव होते हैं?
   ग्रुप न. 2 किशोरियों के साथ घर के बाहर कौन–कौन से भेदभाव होते हैं?
   ग्रुप न. 3 महिलाओं के साथ घर के अन्दर कौन–कौन से भेदभाव होते हैं?

ग्रुप न. 4 महिलाओं के साथ घर के बाहर कौन–कौन से भेदभाव होते हैं?

4. समूह कार्य के बाद प्रत्येक ग्रुप से प्रस्तुत करने के लिए कहें।
5. ग्रुप प्रस्तुतीकरण के बाद सहजकर्ता प्रतिभागियों से पूछे कि और कौन कौन से भेदभाव हैं जो आप नहीं लिख पाये या ग्रुप में चर्चा नहीं कर पाये। प्रतिभागियों से निकले बिन्दुओं तथा सहजकर्ता अपनी तरफ से भी जोड़ सकते हैं।
6. सहजकर्ता को चाहिये कि वह चारों समूहों से निकले हुए भेदभाव के बिन्दुओं को मुख्य तौर पर निम्न प्रकार से वर्गीकृत करते हुए स्पश्ट करें –
   - कामों में भेदभाव व काम के अवसरों में भेदभाव
   - पढ़ाई के अवसरों में भेदभाव
   - बाहर जाने में भेदभाव
   - पहनावे में भेदभाव
   - बोलने में भेदभाव
   - रीति रिवाजों में भेदभाव, आदि

गतिविधि : 2 भेदभाव को बढ़ावा देने वाले सामाजिक मूल्य

1. इसके बाद प्रतिभागियों से पूछे कि और कौन–कौन सी सामाजिक मान्यताएं/परम्पराएं हैं जो महिलाओं के साथ भेदभाव व हिंसा को बढ़ावा देती हैं?
2. प्रतिभागियों से निकलने वाले जवाबों को चार्ट पर लिखते जायें। यदि प्रतिभागियों की ओर से जवाब न निकल रहा हो तो उन्हें उदाहरण देकर प्रोत्साहित करें। जैसे –
   - लड़कियों की शादी जितना जल्दी हो जाय उतना अच्छा
   - महिलाओं का काम घर संभालना तथा पुरूषों का काम पैसा कमाना
   - लड़कियों की न में भी हॉ होती है
   - महिलाएं कमजोर व पुरूष ताकतवर होते हैं
   - रात के समय लड़कियों व महिलाओं का घर से बाहर निकलना ठीक नही है
   - पति–पत्नी के बीच झगड़ा घरेलू मामला है
   - महिलाएं सही निर्णय नही ले पाती
   - बच्चों की देखभाल करना महिलाओं की जिम्मेदारी है

गतिविधि : 3 भेदभाव का असर

1. सहजकर्ता फिर खुली चर्चा कराये कि घर और बाहर महिलाओं व लड़कियों के साथ होन वाले भेदभाव का असर महिलाओं/लड़कियों के जीवन में किस तरह पड़ रहा है?
2. सहजकर्ता को चाहिये कि वे सामूहिक चर्चा से निकलने वाले बिन्दुओं को चार्ट में लिखते जाय, जो निम्न प्रकार से हो सकते हैं –
   - आत्मविश्वास कम होने लगता है जिससे वे अपनी बात नही कह पाती
   - दब्बूपन की शिकार हो सकती हैं।
   - दूसरे लोगों से बात करने में डर व भय बना रहता है।
   - शिक्षा से वंचित रह जाती हैं/पढ़ाई में मन नही लगता
   - आगे बढ़ने के अवसर रूक जाते हैं।
   - दूसरों (पुरूषों) पर निर्भर रहने लगती हैं।
   - हिंसा की शिकार होती हैं तथा विरोध नही कर पाती।

- स्वास्थ्य कमजोर होने लगता है व बीमार रहती हैं।
- घर से भाग जाना या आत्महत्या कर लेती हैं

गतिविधि उपरान्त प्रकाशित मुद्दे :

वर्तमान सामाजिक भूमिकाओं व रूढ़िवादी परम्पराओं के चलते लड़कियों और महिलाओं के साथ घर व घर के बाहर कई तरह से भेदभाव किये जाते हैं, उन्हें कमतर आंका जाता है तथा भेदभाव करने के पीछे पुरूषवादी मानसिकता काम करती है। जिसका बुरा असर लड़कियों व महिलाओं के सम्पूर्ण जीवन में पड़ता है। अतः लड़कियों व महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को रोकने के लिए लड़कों व पुरूशों को पहल करनी होगी तथा भेदभाव पूर्ण सामाजिक मान्यताओं को बदलना होगा ताकि बराबरी युक्त समाज का निर्माण किया जा सकें।

सत्र 6 : प्रशिक्षण से मिली जानकरी व सीख के आधार पर भावी नियोजन

पद्वति : चर्चा व व्यक्तिगत नियोजन
समय : 30 मिनट
सामग्री : नोट पैड, पेन

उददे्श्य :

- प्रशिक्षण से मिली जानकारी व सीख का व्यक्तिगत स्तर व गांव/समुदाय के स्तर पर क्या कर सकते हैं एक ठोस नियोजन तैयार करवाना।

गतिविधियां :

1. सहजकर्ता, प्रतिभागियों को बोर्ड पर नियोजन के बिन्दु लिख कर बताये कि आपको प्रशिक्षण के दौरान बनी सीख के आधार पर क्या करना है जो कि आपके लिए संम्भव है।
2. सबसे पहले खुद के व्यवहार में क्या बदलाव लायेगें लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. इसके बाद गांव/समुदाय स्तर पर क्या करेगें, लिखने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे –
    - लड़को के समूह बनाकर जानकारी देना/समझाना
    - लड़को/पुरूषों के साथ हर महीने बैठक कर चर्चा करना व जानकारी देना
    - दी गई सामग्री के आधार पर घर में व दूसरे पुरूषों के साथ चर्चा करना
    - लड़कियों व महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव रोकने के लिए दूसरे पुरूषों को समझाना
    - कम उम्र में शादी न इसके लिए मिलकर प्रयास करना तथा मेन्टर को बताना
    - लड़कियों और महिलाओं पर होने वाली हिंसा के खिलाफ आवाज उठाना तथा मेन्टर को बताना
    - किये जाने वाले सकारात्मक प्रयासों व आने वाली चुनौतियों की कहानी लिखना/संस्था के साथियों (मेन्टर) को बताना

एक दिवसीय प्रशिक्षण पर फीडबैक लेने के बाद सभी प्रतिभागियों व सहयोगियों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन करें।

———————————————————————————————————————